



भारतीय वानिकी अनुसंधान
एवं शिक्षा परिषद्

वानिकी समाचार

दिसम्बर 2017

वर्ष 09, अंक 7

अनुक्रमणिका

पृ.सं.

1. डॉ. हर्षवर्धन, माननीय केबिनेट मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, का वन अनुसंधान संस्थान दौरा
1. महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष
2. कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें
4. प्रशिक्षण कार्यशालाएं
5. वृक्ष उत्पादक मेला / किसान मेला
6. महानिदेशक का दौरा
6. वन विज्ञान केन्द्र एवं प्रदर्श ग्राहों के अर्न्तगत कार्यकलाप
6. प्रकाशन
6. परामर्शी
5. प्रतिनिधियों का दौरा
7. आकाशवाणी / दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी प्रसारण
7. सूचना प्रौद्योगिकी की पहल
7. विविध
8. उच्च उत्पादक प्रकारों पर समाचार
8. मानव संसाधन समाचार

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष

वन अनुसंधान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून

- जिला महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुरुग्राम एवं झज्जर के 40 विभिन्न स्थानों से वनस्पति कीटों के नमूने एकत्रित किए गए तथा *अपेंटेलस प्रजाति* की जाँच हेतु उन्हें अल्कोहॉल में संरक्षित किया गया। *अपेंटेलस प्रजाति* के उद्भव हेतु, उनके प्रयोगशाला में उपयोग के लिए विभिन्न वन वृक्ष प्रजातियों पर लेपीडोप्टेरा लार्वा के पांच नमूने एकत्रित किए गए। *अपेंटेलस प्रजाति* की पहचान एवं छटाई का कार्य प्रगति पर है।
- *क्लोरोफेरस एन्नुलेरिस* का जीव विज्ञान अध्ययन एवं पालन जारी है। प्रभावित बांस प्रजातियों को काटकर, परीक्षण कर कुंदों (billet) में एकत्रित किया गया तथा उन्हें जीव विज्ञानीय निगरानी हेतु पिंजरे में बंद करके रखा गया। क्षतिग्रस्त बांस की प्रजातियों का सर्वेक्षण और संग्रहण जारी है।

डॉ. हर्षवर्धन, माननीय मंत्री, पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, का वन अनुसंधान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून दौरा

- डॉ. हर्षवर्धन, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार, नई दिल्ली ने 23 दिसम्बर 2017 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून का दौरा किया तथा उन्होंने संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की समीक्षा की। इस बीच वे व.अ.सं. के संग्रहालयों में भी गए और उन्होंने वन अनुसंधान संस्थान में स्थापित फारेस्टर्स मेमोरीयल जाकर उन वन रक्षकों (फारेस्टर्स) को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की जिन्होंने बहुमूल्य वनों की सेवा एवं सुरक्षा हेतु अपने प्राणों का बलिदान दिया। माननीय मंत्री जी के साथ श्री सिद्धांत दास, भा.व.से., महानिदेशक (वन), प.व.ज.प. मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली भी उपस्थित थे।



डॉ. हर्षवर्धन, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन, का वन अनुसंधान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून दौरा

देहरादून एवं हरिद्वार जिलों (उत्तराखंड के हरिद्वार, देहरादून एवं राजाजी राष्ट्रीय पार्क) में वन प्रजातियों (12/C1a वन ऑक फॉरेस्ट, 3C/C2 नम शिवालिक साल वन एवं 5B/C2 उत्तरी शुष्क मिश्रित पर्णपाती वन) में 10 हिस्सों का नमूना सर्वेक्षण किया गया।

- दो वन उप-प्रकारों के वृक्षों एवं शाकों के हर्बेरियम वानस्पतिक सर्वेक्षण किये एवं हर्बेरियम तैयार किये गये। अध्ययन क्षेत्र (देहरादून में बेनोग वन्य जीव अभ्यारण्य, किमाई वन, मसूरी एवं शिवालिक रेंज तथा हरिद्वार एवं राजाजी नेशनल पार्क) के विभिन्न 7 वन प्रकारों का जी आइ एस मानचित्र तैयार किया गया। तितलियों की दो प्रजातियों के जीवन इतिहास का पिंजरों में उनके पालन द्वारा प्रयोगशाला में अध्ययन किया गया। 9 उप-प्रकारों के वनों में पौधों (वृक्षों, शाको एवं जड़ी बूटियों) के 32 हर्बेरियम शीटों के नमूने लिए गए तथा उनकी पहचान की गई।
- पॉपलर पर्ण निष्पत्रक *क्लोसटेरा क्युप्रेटा* के विरुद्ध पॉपलर क्लोन की सहिष्णुता जांच हेतु 10 पॉपलर क्लोनों के पत्रको का जैव रासायनिक अध्ययन किया गया।
- यमुना क्षेत्र के ऊपरी वन प्रभाग में वनाग्नि पश्चात प्रभावों की जांच हेतु 75 मृदा नमूने प्रयोगशाला विश्लेषण हेतु एकत्रित किये गये। फॉस्फोरस एवं जल धारण क्षमता जांच हेतु 12 मृदा नमूनों का विश्लेषण किया गया। वनाग्नि प्रभाव की जांच हेतु कुमाऊँ वन क्षेत्र के हल्द्वानी, नैनीताल, अल्मोडा और बागेश्वर क्षेत्र में क्षेत्र सर्वेक्षण किये गये।
- उत्तराखंड के चीड़, देवदार, साल एवं वन बाँज वनों में जैविक कार्बन एवं पोटेशियम के 10 मृदा नमूनों का विश्लेषण किया गया।
- नीति (चमोली) एवं माना (बद्रीनाथ) के वनों में उगने वाली *बेटुला यूटिलिस* की दो वृक्ष आबादी, उनकी छाल में कुल ट्रिटटरपिनाइड मात्रा हेतु पहली बार लक्षण सुनिश्चित किये गये।
- जी.सी.-एम.एस. विश्लेषण विधि द्वारा, पूर्व में अज्ञात, अस्थिर जंगली मशरूम की खाद्य प्रजाति "*एस्ट्रियस हाइग्रोमेट्रिकस*" का निर्धारण किया गया।

- *पॉपुलस डेल्टोइडस* (पॉपलर) की छाल एवं बुरादे से पूर्व में पृथक निष्कर्षों ने पात्रे एंटीऑक्सीडेंट तथा एल्फा-ग्लूकोसिडेस अवरोधक क्रिया प्रदर्शित की, डाएओन एच पी 20 का उपयोग कर विभाजित किया गया तथा फिनॉलिक समृद्ध खंडो को उनके एल सी-एम एस विश्लेषण हेतु पृथक किया गया।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान (व.आ.वृ.प्र.सं.), कोयम्बटूर :

- इमली एक बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजाति है जो फार्म वानिकी, सामाजिक वानिकी एवं रोपण फार्मों पर वनीय रूप में पायी जाती है। मंदी के समय यह ग्रामीण जनसंख्या को आय एवं रोजगार के अवसर प्रदान कर जीविकोपार्जन में सहायक होती है। इमली के उत्कृष्ट पारंपरिक संसाधनों की पहचान एवं सीधे चयन से फल उत्पादकता को बढ़ावा मिलेगा। वानस्पतिक एवं प्रजनन गुणों हेतु इमली के 90 क्लोनों का मूल्यांकन किया गया। क्लोनल बाग, विरिंजपुरम, वेल्लोर, जिला तमिलनाडु में बायोमेट्रिक, पुष्पण, तथा फलन गुणों के आधार पर इमली के सात उत्कृष्ट क्लोनों की जांच की गई। प्रोमिसिंग क्लोनों को एप्रोच ग्रापिटिंग विधि द्वारा विभाजित कर 1000 कलमें बांधी गई।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- मृदा में NH_4N , NO_3N , PO_4P तथा K का संचय, विभिन्न स्तर के उपचारित बहिः स्रावों के अनुप्रयोगों, परिक्षणाधीन प्रजातियों तथा मृदा परतों के कारण पर्याप्त भिन्नता थी। ट्यूबवैल जल में $1/2$ पी ई टी था $3/4$ पी ई टी पर बहिस्राव की तुलना में एक संभावित वाष्पोत्सर्जन (पी ई टी) में बहिः स्राव के प्रयोग से अधिकांश तत्वों की मात्रा अधिक थी।
- *कोम्बीफोरा विघटी* (गुग्गल) से ओलियो-गम रेजिन निष्कर्षण हेतु संवहनीय विधि विकसित की गई है। 8 से.मी. का समस्तरीय चीरा सर्दियों (नवंबर तथा फरवरी) में, दो बार 19.90 ± 0.35 परिधि आकार की तीन वृक्ष-शाखाओं में लगाने पर तीन वर्ष बाद भी, लगभग 10 ग्राम प्रति वृक्ष गुग्गल गम का निष्कर्षण किया जा सकता है।

कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें

सं.	शीर्षक	समयावधि	लाभार्थी
वन उत्पादकता संस्थान (व.उ.सं.), रांची			
1.	जल प्रभावित क्षेत्र हेतु कृषि वानिकी तंत्र	19-20 दिसम्बर 2017	भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों तथा अन्य सरकारी संगठनों / विश्वविद्यालयों / एन जी ओ / विद्यार्थियों / पॉपलर / वृक्ष उत्पादकों / किसानों के 200 प्रतिनिधिगण

वन अनुसंधान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून

- | | | | |
|----|---|-----------------|-----------------------------------|
| 2. | सैलूलोसिक (बेकार) पदार्थों से कागज तथा विज्ञान एवं जैव ऊर्जा के क्षेत्र में भावी शोध आवश्यकताएं | 5 दिसम्बर 2017 | वैज्ञानिक, हितधारक एवं शिक्षाविद् |
| 3. | वानिकी में प्रयोग हेतु जैवकीटनाशक एवं जैव-उर्वरकों का विकास | 27 दिसम्बर 2017 | — |



जल प्रभावित क्षेत्रों हेतु कृषि वानिकी तंत्र पर राष्ट्रीय सम्मेलन



वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान (व.आ.वृ.प्र.सं.), कोयम्बटूर

- | | | | |
|----|---------------------------------------|---------------|---|
| 4. | जैव-पूर्वक्षण संभावनाएं एवं चुनौतियां | आवधिक सेमीनार | व.आ.वृ.प्र.सं. के 65 कर्मचारी एवं शोध अध्येता |
|----|---------------------------------------|---------------|---|

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (शु.व.अ.सं.), जोधपुर

- | | | | |
|----|--|----------------|--|
| 5. | पश्चिमी राजस्थान में जलवायु परिवर्तन पर अनुकूलन एवं न्यूनीकरण पर एम पावर के प्रभाव पर अध्ययन परियोजना के अंतर्गत प्रचार-प्रसार कार्यशाला | 4 दिसम्बर 2017 | एम पावर के 35 विभिन्न गैर सरकारी संगठन और कार्यरत समूह |
|----|--|----------------|--|

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान (व.व.अ.सं.), जोरहाट

- | | | | |
|----|--|-----------------|---|
| 6. | राष्ट्रीय रेड्ड + कार्यनीति पर क्षेत्रीय हितधारक परामर्श एवं क्षमता निर्माण पर कार्यशाला | 20 दिसम्बर 2017 | उत्तर पूर्व भारत के राज्य वन विभाग से 30 अधिकारी, स्वयं सहायता समूहों (एस.एच.जी.), गैर सरकारी संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों, सिविल सोसाइटी के सदस्य |
|----|--|-----------------|---|

सं.	शीर्षक	समयावधि	लाभार्थी
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (भा.वा.अ.शि.प.), देहरादून			
1.	वानिकी अनुसंधान में सांख्यिकीय प्रणाली	11-15 दिसम्बर 2017	भा.वा.अ.शि.प. तथा इसके संस्थानों के वैज्ञानिक
वन अनुसंधान संस्थान (व.अ.सं.), देहरादून			
2.	बीज प्रौद्योगिकी	11-15 दिसम्बर 2017	उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग के कार्मिक
3.	उत्तराखंड एवं उत्तर प्रदेश के पॉपलर उत्पादक	14 दिसम्बर 2017	उत्तराखंड एवं उत्तर प्रदेश के 215 किसान एवं पॉपलर उत्पादक
वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान (व.आ.वृ.प्र.सं.), कोयम्बटूर			
4.	जैव विविधता संरक्षण एवं संवहनीय उत्पादन हेतु बीज पौधशाला प्रौद्योगिकी	14-15 दिसम्बर 2017	फॉरेस्टर, रेंजर, किसान, कृषि संबंधित अधिकारी, शोधकर्ता, गैर सरकारी संगठनों एवं नर्सरी उद्यमियों सहित 18 सदस्य
काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (का.वि.प्रौ.सं.), बंगलुरु			
5.	चंदन काष्ठ, बीज बुवाई, नर्सरी एवं पौधरोपण प्रौद्योगिकी	11-15 दिसम्बर 2017	43 प्रशिक्षु, किसान, उद्यमी, भूमि विकासक आदि
6.	विस्तार कार्यकलाप के एक भाग के रूप में चंदन काष्ठ कृषि वानिकी से संबंधित अन्य पहलू	22 दिसम्बर 2017	75 किसान
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (शु.व.अ.सं.), जोधपुर			
7.	भंगुर रेगिस्तानी पारितंत्र के संवहनीय विकास हेतु एकीकृत प्रयास	18-22 दिसम्बर 2017	भारत के विभिन्न राज्यों के 24 भा.व.से. अधिकारी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.), शिमला

8.	पेटेंट दाखिले एवं आई.पी.आर. मामले	19 दिसम्बर 2017	वैज्ञानिक, अधिकारी एवं शोध सहायक कर्मचारियों समेत 50 प्रतिभागी
9.	शिमला के नोहरा रेंज में खारसू बांज में मृत्यु दर के कारण एवं प्रबंधन	12 दिसम्बर 2017	प्रभावित क्षेत्र के 8 लाभार्थी
10.	अन्य सेवाओं के कार्मिकों के वानिकी प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास हेतु छत्र (अंब्रेला) योजना के अंतर्गत वन एवं वन्य जीव अधिनियम तथा वन संरक्षण अधिनियम, वन्यजीव सुरक्षा अधिनियम एवं भारतीय वन अधिनियम के विषय में सामान्य विचार।	6-8 दिसम्बर 2017	हिमाचल प्रदेश के विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं पेशेवर



हि.व.अ.सं., शिमला में पेटेंट दाखिले एवं आई.पी.आर. मामलों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम



हि.व.अ.सं., शिमला, में शिमला के नोहरा रेंज में खारसू बांज में मृत्यु दर के कारण एवं प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

वन जैवविविधता संस्थान (व.जै.सं.), हैदराबाद

11.	कार्ययोजना तैयार करने हेतु वन संसाधनों का आकलन करना	4,5,8,11,12 एवं 14 दिसम्बर 2017	कोठागुडम, मेडक, नालगोंडा, नरसिंहपुर तथा गंजरानी के वन कर्मचारी
-----	---	---------------------------------	--

वृक्ष उत्पादक मेला / किसान मेला

संस्थान	प्रतिभागी / संगठन	समयावधि	स्थान
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर का.वि.प्रौ.सं., बंगलूरु	केरल बांस उत्सव 2017 का आयोजन केरल बांस मिशन एवं केरल औद्योगिक प्रचार ब्यूरो, केरल ने किया।	1-5 दिसम्बर 2017	मरीन ड्राइव, कोचीन
उ.व.अ.सं., जबलपुर	अंतर्राष्ट्रीय जड़ी बूटी मेला	14 से 20 दिसम्बर 2017	भोपाल

महानिदेशक का दौरा

- डॉ. सुरेश गैरोला, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने 19 से 23 दिसम्बर, 2017 तक मेघालय का दौरा किया तथा उन्होंने व.व.अ.सं., जोरहाट एवं मेघालय राज्य वन विभाग के संयुक्त रूप से किए जा रहे बहुत से कार्यकलापों पर चर्चा की। वे वहां मेघालय की माउफलांग समुदाय से भी मिले।



मेघालय में माउफलांग समुदाय ने महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. का स्वागत किया

वन विज्ञान केन्द्रों एवं प्रदर्शन ग्रामों के अंतर्गत कार्यकलाप

- वन प्रशिक्षण स्कूल, मणिपुर, मंत्रीपूखूरी, इंफाल में मणिपुर के वन विभाग के अग्रपंक्ति कर्मचारियों, अवर श्रेणी कर्मचारियों, किसानों एवं मणिपुर के गैर सरकारी संगठनों ने व.व.अ.सं. जोरहाट में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।
- गुचामुरा, बमुटिया, पश्चिमी बंगाल में (वन विज्ञान केंद्र के अंतर्गत सी.एफ.एल.ई., अगरतला में 27 व 28 अगस्त 2017 को 'खेती के अंतर्गत प्रोत्साहन एवं आय बढ़ाने हेतु ब्रूम ग्रास (झाडू घास) पर मूल्य वर्धन पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।



सी.एफ.एल.ई., अगरतला में झाडू घास (ब्रूम ग्रास) के मूल्यवर्धन पर प्रशिक्षण

प्रकाशन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (उ.व.अ.सं.) ने निम्नलिखित तकनीकी बुलेटिनों का प्रकाशन किया है :

- वानिकी पौधशालाओं में सफेद कीटखिंभ के प्रबंधन हेतु आदर्श मार्गदर्शिका
- मैदा छाल (*लिटिसिया ग्लूटिनोसा लौर*) स्थिति एवं संरक्षण

परामर्शी

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.), देहरादून

- टिहरी हाइड्रो विकास निगम इंडिया लि., हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लि., कर्नाटक राज्य अधिकारिक प्राधिकरण, उत्तराखण्ड जल विद्युत निगम लिमिटेड; प.व.ज.प. मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली; कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता, एम टी पी सी लिमिटेड, नोएडा, सी एम पी डी आइ, रांची तथा एन एम डी सी, लि; हैदराबाद द्वारा प्रदत्त 11 परामर्शी परियोजनाओं पर कार्य प्रगति पर है।

आकाशवाणी / दूरदर्शन के माध्यम से वानिकी को लोकप्रिय बनाना

शीर्षक	चैनल	दिनांक
वर्षा वन अनुसंधान संस्थान (व.व.अ.सं.), जोरहाट		
पूर्वोत्तर के महत्वपूर्ण विकास क्षेत्र के रूप में बांस	स्थानीय टी.वी. चैनल "हैडलाइन्स, त्रिपुरा"	22 दिसम्बर 2017

सूचना प्रौद्योगिकी पहल

- भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 'लाइव सर्वर' पर ऑनलाइन कार्यालय अभिलेख (आदेश/एम.ओ.एम./कार्यसूचियां आदि) प्रणाली पर अनुप्रयोग विकसित किया है। इस अनुप्रयोग का URL है <http://records.icfre.org/>

विविध

संस्थान	विशेष दिन/विषय वस्तु	समयावधि
हि.व.अ.सं., शिमला	अंतर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस	11 दिसम्बर 2017
बां.व.बें.उ.अ.के., आईजॉल		8 और 18 दिसम्बर 2017
व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर		19 दिसम्बर 2017
हि.व.अ.सं., शिमला	स्वच्छ भारत अभियान	27 दिसम्बर 2017
व.व.अ.सं., जोरहाट		28 दिसम्बर 2017



हि.व.अ.सं. शिमला में स्वच्छ भारत अभियान




व.व.अ.सं. जोरहाट में स्वच्छ भारत अभियान



बां.व.बें.उ.अ.के. आईजोल में स्वच्छ भारत अभियान

उच्च पैदावार प्रकारों पर समाचार

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में अभी तक कैंजूरिआना एवं यूकेलिप्टस के 30 क्लोन जारी किए हैं तथा किसानों हेतु इन उच्च उत्पादकता प्रकारों के व्यापक पैमाने पर कृषि को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कर रहा है। इस संदर्भ में 21 दिसम्बर 2017 के 'द न्यूज इंडिया एक्सप्रेस' में व.आ.वृ.प्र.सं., क्लोनों के उच्च पैदावार प्रकारों का विवरण छपा था।



06 CHENNAI

TAMIL NADU

THURSDAY 21.12.2017

INSTITUTION
FOR TAMIL

‘Reap rewards in 2 yrs with Casuarina farming’


Sathivel who holds a masters in engineering has undertaken project to distribute 1 crore saplings to the farmers

HARISH MURALI @Cuddalore

A 26-year old farmer, with a Masters degree in Engineering, has successfully taken up casuarina cloning in Cuddalore and is now encouraging other farmers to take up the practice, which can rake in profits in just two years.

P Sathivel, who runs the Sathi Clonal nursery at Kurinchipadi, after obtaining training from the Institute of Forest Genetics and Tree Breeding at Coimbatore, has undertaken a project to generate 1 crore saplings for distribution among farmers.

The farmer has now begun supplying saplings to corporate giants such as ITC, TNPL and Seshasayee paper mills for at least



Sathivel at his casuarina nursery at Kurinchipadi, Cuddalore.

₹5,000 for a tonne.

After seeing his father grow several ornamental flowering plants in their farm, Sathivel urged him to take up casuarina cultivation. Though they ventured in for casuarina three years ago, it was only in January this year the new variety CH1 and CH5 reaped them much profit. CH1 and CH5 varieties were launched after several years of research by the IFGTB. He claims that he is the only person in State who has taken up the rights for the varieties, paying a sum of ₹6 lakh, as no one else was willing to take up Casuarina cultivation.

“Normally these trees take at least 4-5 years for proper maturation, however the new varieties

can mature in two years. This tree cultivation should be encouraged,” says Sathivel, who has raised a nursery after entering into an Memorandum of Understanding with the Coimbatore based institute, where the varieties were found by scientist Nicodamus. Though the land is very fertile for casuarina farming, most farmers are not interested due to the long period it takes to mature. However, he claims the CH1 and CH5 varieties take less time are also high in quality.

As most paper companies tend to import raw materials from abroad, the demand is always present. Thus farmers can easily make profit with minimum production cost, he added.

मानव संसाधन समाचार

नाम एवं पदनाम

भा.वा.अ.शि.प. से प्रत्यावासन/कार्यमुक्ति
श्री शिव कुमार सी.एम., भा.व.से., स.म.नि
(शिक्षा एवं शोध)

दिनांक
12.12.2017

नाम व पदनाम

सेवानिवृत्त

श्री एम. भास्करन, अनुभाग अधिकारी, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

दिनांक

31.10.2017

संरक्षक :

डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक

संपादक मंडल :

श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष

डॉ. (श्रीमती) शामिल कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग),

श्री रमाकांत मिश्र, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी,

(मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), सदस्य

प्रत्याख्यान

- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में प्रकाशित सामग्री संपादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रकाशित सामग्री प्रतिबिधित नहीं करती है।
- यहां प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।